>

Title: Need to look into the socio-economic and environmental impact due to the large number of thermal power projects in Janjgir Champa district, Chhattisgarh.

डॉ. चरण दास महन्त (कोरबा): यह सर्वविदित है कि कोयला आधारित ताप विद्युत परियोजना अत्यंत प्रदूषणकारी और जल-भूमि से प्राकृतिक संसाधनों की खपत करने वाली परियोजना होती है। सामान्यतः भारत में पॉवर प्रोजेक्ट में उपयोग होने वाले कोयले की गुणवत्ता में कमी होने से 50 से 60 लाख टन कोयला एक-एक हजार मेगावाट पॉवर प्लान्ट में एक वर्ष में ही जल जाता है। अर्थात् भारी मात्रा में राख (कोयले का 40-50 प्रतिशत) और सल्फर और नाईट्रोजन गैस का उत्सर्जन होता है। छत्तीसगढ़ में जांजगीर चांपा जिला सर्वाधिक उन्नत कृषि वाला एकमात्र जिला है। यहां राज्य के औसत 30 प्रतिशत की तुलना में 70 प्रतिशत कृषि भूमि सिंचित है। ऐसे जिले में छत्तीसगढ़ सरकार ने 25 कोयला आधारित ताप विद्युत संयंत्रों, जिनकी कुल क्षमता 26000 मेगावाट होगी, स्थापित करने के एम ओ यू विभिन्न निवेशकों से हस्ताक्षरित किये हैं। इन संयंत्रों के लिए भूमि और पानी की उपलब्धता का आश्वासन भी राज्य सरकार ने दे दिया है। कुछ संयंत्रों का भूमि अधिग्रहण भी प्रारंभ हो गया है।

उक्त स्थिति में केन्द्र सरकार से अनुरोध है कि इन ताप विद्युत संयंत्रों का पृथक-पृथक पर्यावरण आंकलन व मंजूरी के पूर्व ही जांजगीर चांपा जिले के क्षेत्र की वहन क्षमता का आंकलन और सभी संयंत्रों की एक साथ स्थापना से पड़ने वाले दुप्रभाव का पर्यावरण, सामाजिक तथा आर्थिक दृष्टियों से आंकलन कराया जाये।